Springdales School

Pusa Road, New Delhi

(Affiliated to C.B.S.E)

वसंत भाग-1

पाठ-8

ऐसे-ऐसे

निर्माण समिति

आभार	
सलाहकार	डॉ. अमीता मुल्ला वॉतल (प्रधानाचार्या, स्प्रिंगडेल्स स्कूल, पूसा रोड)
परियोजना समन्वयक	सुश्री सौम्या तनेजा
विषय (सामग्री)	सुश्री अभिलाषा गोस्वामी
तकनीकी सहायक	सुश्री बेला दीवान सुश्री निधि तिवारी सुश्री पूजा कुमार मकौल
कला एवं रेखाचित्र	डॉ निशित जैन सुश्री पूजा जैन फाइन आर्ट स्टूडेंट्स- रेवती सिंह, इनाया पर्व, विभूति जैन, जैस्मीन कौर, तान्या शर्मा, साइमा मकौल
भाषा सहयोग	सुश्री श्वेता राजपाल, हिंदी टी.जी.टी. सुश्री अभिलाषा गोस्वामी, हिंदी टी.जी.टी. सुश्री सीमा गल्यान, हिंदी टी.जी.टी.
प्रशिक्षण और विचार	श्री संदीप सेठी, निदेशक शिक्षा, एम.एस.एम.२ म्युजियम ट्रस्ट

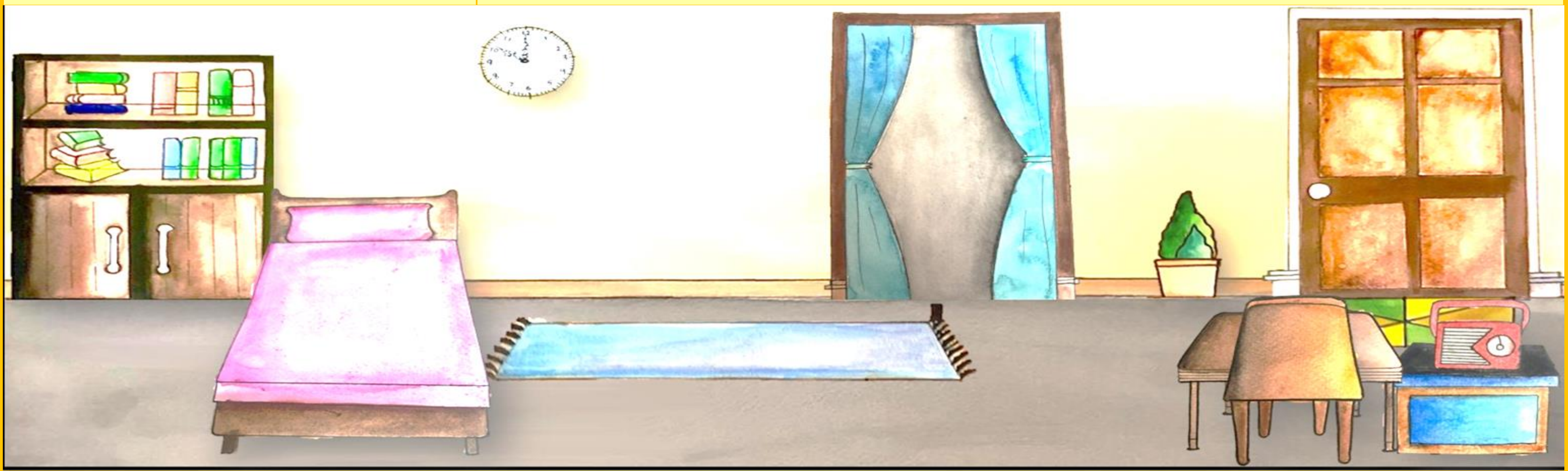

उद्घोषणा

इस कहानी के द्वारा बाल मनोविज्ञान को सरल, सहज व संपूर्णता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। यह काल्पनिक कहानी बच्चों की कल्पना शक्ति को प्रभावित करती है और उनकी सोच को व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है। इस कहानी के पात्र व घटनाएँ पूर्णतः काल्पनिक हैं जिनका सच्ची घटनाओं व किसी व्यक्ति (मृत अथवा जीवित) से कोई संबंध नहीं है ।

इस कहानी की प्रतिलिपि वर्जित है।

Printed and Published by:

Springdales School
Pusa Road UPPER RIDGE ROAD
JUNCTION, New Delhi, 110005
Website:
www.springdalespusa.com

प्रस्तावना

इस चित्रात्मक आलेख 'ऐसे-ऐसे' में लेखक ने बाल मनोविज्ञान को आधार बनाकर एक आठ -नौ साल के बच्चे की सोच को बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है जिसमें बच्चा अपने विद्यालय की छुट्टियाँ समाप्त होने तथा गृह कार्य के बारे में सोच कर परेशान होता है और पेट दर्द का बहाना बनाता है। उसकी पीड़ा देखकर माता-पिता भी परेशान हो जाते हैं। अंततः मास्टर जी को मोहन की बीमारी का पता चलता है और उसका इलाज वे मोहन को विद्यालय से काम करने के लिए छुट्टी देकर करते हैं ।

इस ग्राफिक नॉवल को पढ़कर बच्चे समय,अनुशासन व गुरुजनों के मार्गदर्शन के महत्त्व को समझेंगे। इनका अनुसरण करते हुए वे अपने जीवन में निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

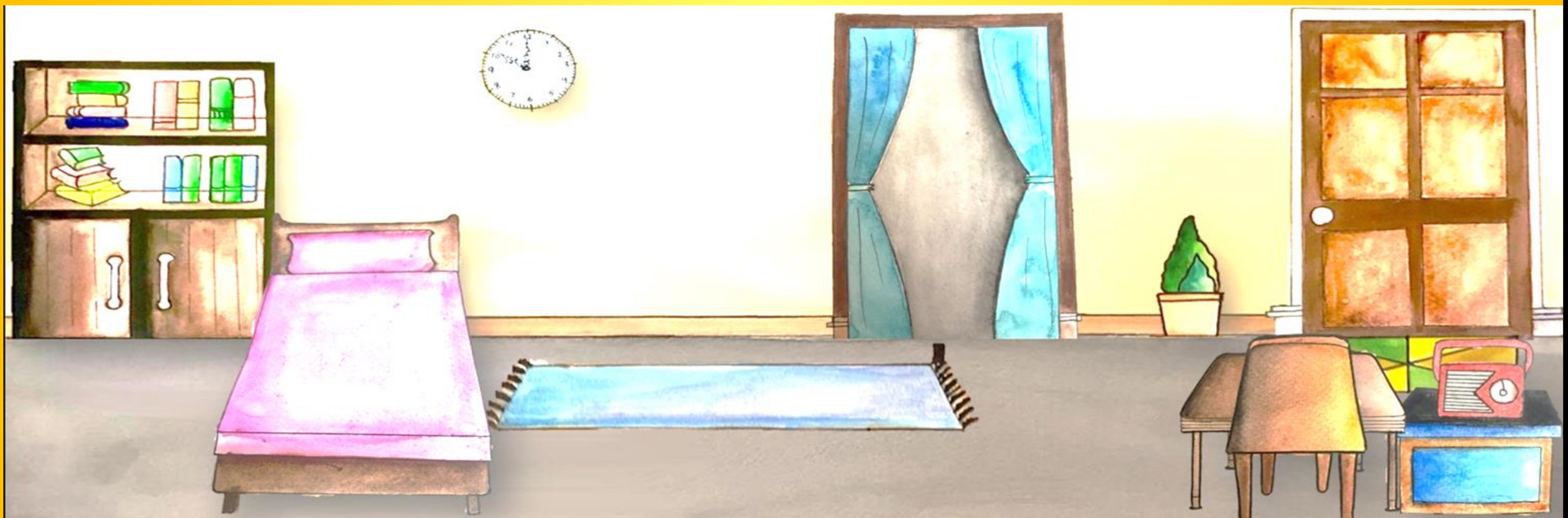

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1	कथा शृंखला	1
2	पात्र परिचय	2-3
3	अधिगम परिणाम	4
4	एकांकी (ऐसे-ऐसे–विष्णु प्रभाकर)	5-16
5	शब्दार्थ	17
6	लघु प्रश्नोत्तरी	18-19
7	भाषा/ व्याकरण संबंधी अभ्यास/शब्द–जाल	20-21
8	सारांश	22

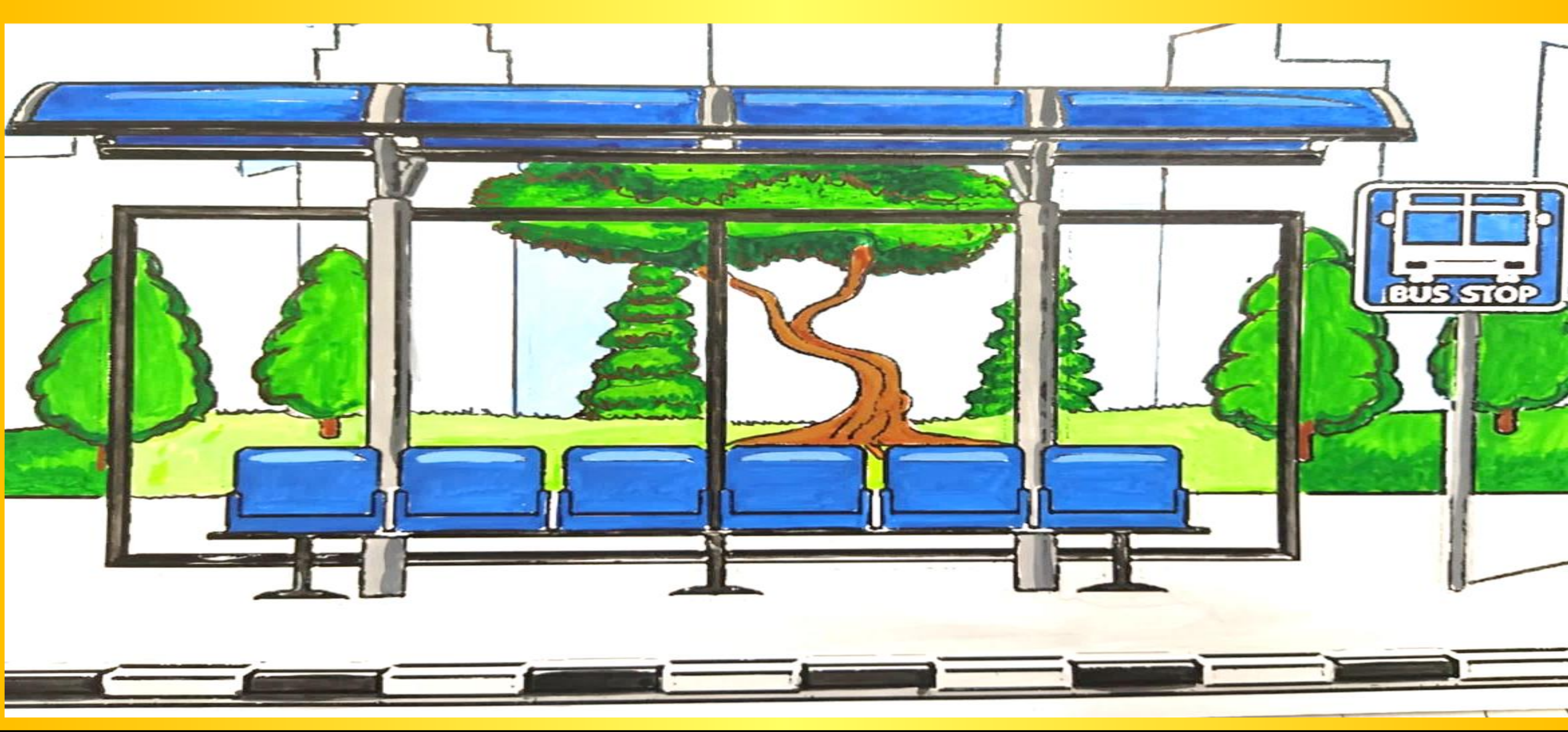

कथा शृंखला

माता -पिता का
बच्चे की नादानी
के कारण
परेशानी उठाना

स्कूल का काम
न करने का
बहाना बनाना

मास्टर जी के
दवारा
परेशानी का हल
निकालना

मोहन
(मुख्य पात्र)

ऐसे- ऐसे

विद्यार्थी
जीवन में
अनुशासन
व समय का
महत्त्व ।

गुरूजनों के
उचित
मार्गदर्शन
का महत्त्व।

परिश्रम
सफलता
की कुंजी
है ।

पात्र-परिचय

मुख्य पात्र

1. मोहन–तीसरी कक्षा में पढ़ने वाला 8-9 वर्ष का नटखट बालक।

2. माँ–मोहन की माताजी (35-40 वर्ष) , एक कुशल गृहणी

3. पिता–मोहन के पिता एक ज़िम्मेदार मुखिया(35-40 वर्ष)

4. मास्टर जी–मोहन के मास्टर जी (50-55 वर्ष), शांत व धैर्यवान व्यक्ति ।

सहायक पात्र

1. दीनानाथ जी– मोहन के पड़ोसी (55-60वर्ष), एक हँसमुख सज्जन।

2. डॉक्टर– एक सरल व्यक्ति(40-45 वर्ष)।

3. रामू की काकी– मोहन की पड़ोसिन (55-60 वर्ष)।

4. वैद्य जी –अनुभवी व विनम्र व्यक्ति (55 - 60 वर्ष)

पात्र

मोहन

मोहन की माताजी

मोहन के पिता

मास्टर जी

दीनानाथ जी

डॉक्टर

रामू की काकी

वैद्‌यजी

अधिगम परिणाम

1. अनुशासन व आज्ञा-पालन जैसे नैतिक मूल्यों का विकास।

2. हिंदी भाषा विधा- 'संवाद लेखन' को भली-भाँति समझना।

3. गुरुजनों की आज्ञा पालन द्वारा ही विद्यार्थी आगामी वर्षों में भविष्य की चुनौती के लिए स्वयं को तैयार करेंगे।

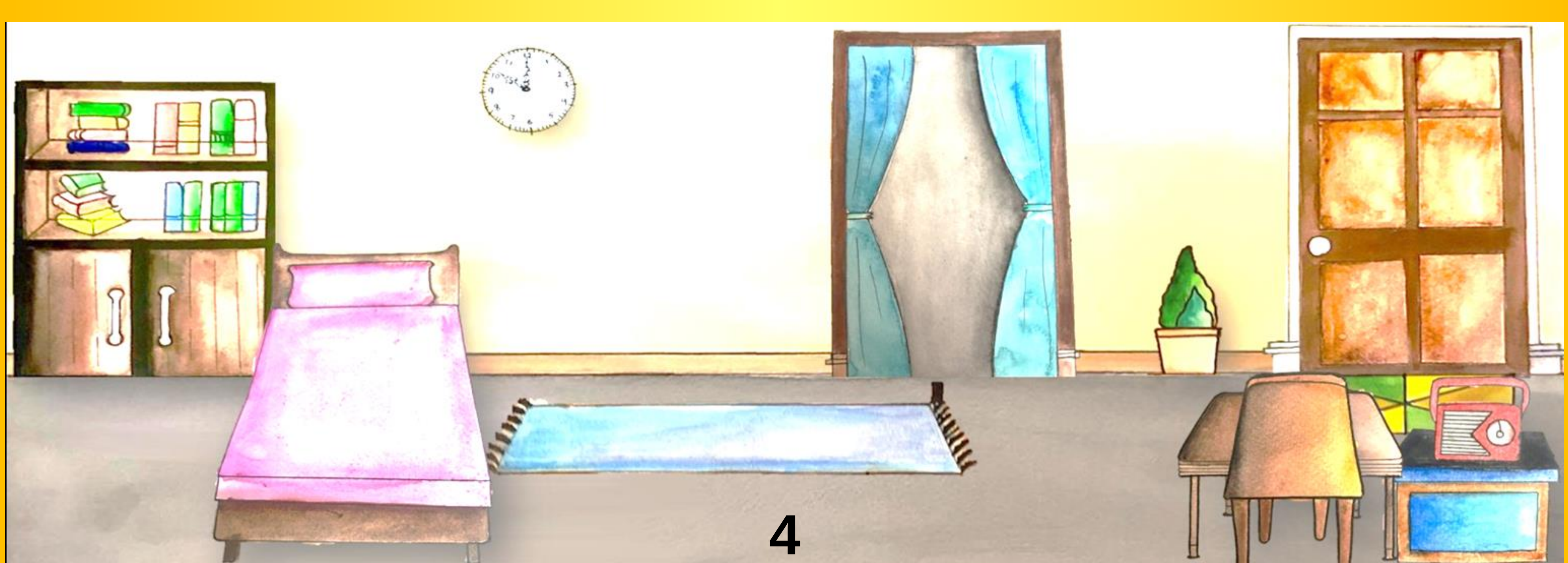

एक फ्लैट में बैठक का दृश्य है। एक कोने में पुस्तकों की अलमारी है और एक ओर रेडियो सेट रखा है। बीच में एक मेज़ व कुछ कुर्सियाँ हैं। मेज़ पर बड़ा काला फ़ोन रखा है। मोहन एक ओर पलंग पर लेटा, पेट को बार-बार पकड़कर बेचैनी महसूस कर रहा है। माता -पिता उसके साथ ही बैठे हैं।

माँ , पिताजी की बातें सुनकर आश्चर्य में पड़ जाती हैं। नई बीमारी का नाम सुनकर अकबका-सी जाती हैं।

मोहन के माता-पिता सोच विचार में होते हैं तभी फोन की घंटी बजती है, मोहन के पिता उठाते हैं।

दीनानाथ जी मोहन की बीमारी की खबर सुनकर उसे देखने के लिए मोहन के घर में प्रवेश करते हैं ।

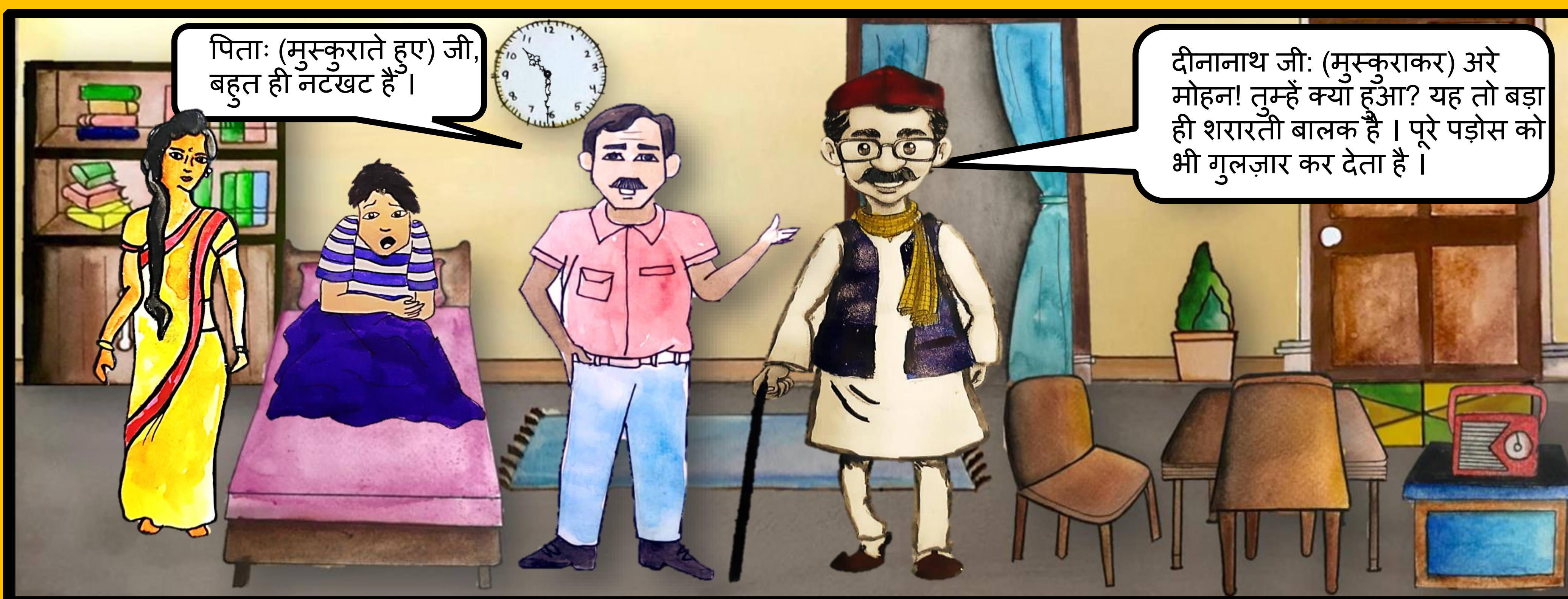

तभी वैद्य जी का प्रवेश होता है ।सब उठकर हाथ जोड़कर खड़े हो जाते हैं । मोहन के पिता वैद्यजी को मोहन का हाल बताते हैं।

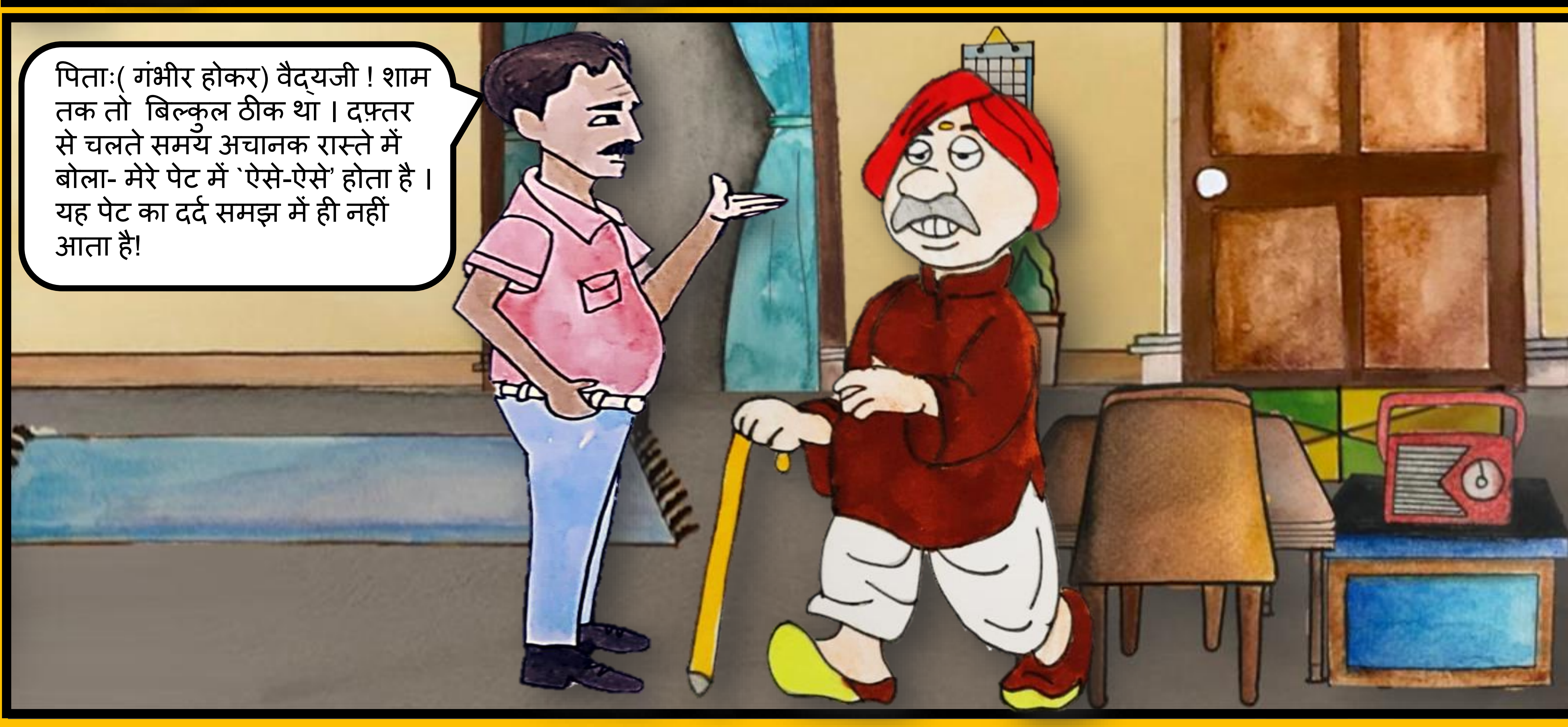

वैद्यजी मोहन की नाड़ी दबा कर देखते हैं ।

मोहन के पिता वैद्यजी को फ़ीस के रूप में पाँच रूपए देते हैं ।वैद्यजी और दीनानाथ जी चले जाते हैं ।तभी डॉक्टर प्रवेश करते हैं ।

डॉक्टर मोहन का पेट दबा कर देखते हैं।

मोहन के पिता डॉक्टर की फ़ीस के रूप में दस रूपए का नोट देते हैं।डॉक्टर चले जाते है व पड़ोसिन का प्रवेश होता है।

तभी बाहर से आवाज़ आती है — मोहन! मोहन! और मास्टरजी का प्रवेश होता है ।

माँः खाया तो बेचारे ने कुछ भी नहीं मास्टरजी !
मास्टर जी: शायद, यह न खाने का दर्द होगा। समझ गया ! उसी में ऐसे-ऐसे होता है ।

माँः (चकित होकर) पर, मास्टरजी ! वैद्य और डॉक्टर तो दस्त की दवा देकर गए हैं।

मास्टर जी : (मुस्कुराकर) माताजी ! मोहन की बीमारी की दवा किसी के पास नहीं है। यह बीमारी अक्सर मोहन जैसे बच्चों को हो जाती है।

मास्टर जी की बात सुनकर मोहन की माँ हैरान हो जाती है।

मास्टर जी की बात सुन कर मोहन शर्मा जाता है।

मोहन गलती पकड़े जाने के एहसास से लज्जित होकर अपना मुँह छिपाता है।

मोहन की माँ मोहन को डाँट रही है तभी पिताजी और साथ में दीनानाथ जी का कमरे में प्रवेश होता है।

शब्दार्थ

1. अंट-शंट – ऐसी-वैसी चीज़ें
2. भला-चंगा– स्वस्थ
3. बला – कष्ट, रोग
4. कल – चैन
5. बदहज़मी – अपच
6. गुलज़ार– चहल-पहल वाला
7. अट्ठाहस– ज़ोर से हँसने की आवाज़
8. वात – एक रोग
9. चकित – हैरान
10. धमा-चौकड़ी –उछल-कूद
11. मौन – चुप, निःशब्द
12. कोप – क्रोध

संदर्भ ग्रंथ सूची

कक्षा- छठी की एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तक(वसंत भाग-1)

बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर

प्रश्न-1 मोहन कौन-सी कक्षा में पढ़ता था ?
(क) पहली कक्षा में
(ख) दूसरी कक्षा में
(ग) तीसरी कक्षा में
(घ) पाँचवी कक्षा में

प्रश्न-2 मोहन कैसा बालक था ?
(क) कमज़ोर
(ख) बीमार
(ग) भला
(घ) शरारती

प्रश्न-3 मोहन ने पिताजी के दफ़्तर में क्या-क्या खाया ?
(क) बर्गर
(ख) समोसे
(ग) केला व संतरा
(घ) मिठाई

प्रश्न-4 माँ ने मोहन का घरेलू उपचार किस प्रकार किया ?
(क) हींग
(ख) चूरन
(ग) पिपरमेंट
(घ) सभी

प्रश्न-5 वैद्य जी को कौन बुलाकर लाया था ?

(क) मोहन की माँ
(ख) मोहन के पिता
(ग) मोहन के पड़ोसी दीनानाथ
(घ) मोहन का मित्र

प्रश्न-6 किस के हाथ से दवा की शीशी छूट जाती है ?

(क) दीनानाथजी
(ख) माँ
(ग) पिता
(घ) वैद्यजी

प्रश्न-7 मोहन ने क्या बहाना बनाया और क्यों?

प्रश्न-8 यदि अगली बार मोहन के पेट में सचमुच दर्द हुआ और किसी ने उसकी बात का विश्वास नहीं किया तो क्या होगा?

प्रश्न-9 मोहन की बीमारी का इलाज करने के लिए कौन-कौन आए ?

प्रश्न-10 मास्टरजी ने मोहन की बीमारी का इलाज किस प्रकार किया ?

प्रश्न-11 डॉक्टर व वैद्यजी को फ़ीस के रूप में कितने-कितने रूपए दिए गए ?

प्रश्न-12 कहानी के आधार पर नीचे दिए गए फ्लो चार्ट को मोहन की चारित्रिक विशेषताओं को बताते हुए पूरा कीजिए ।

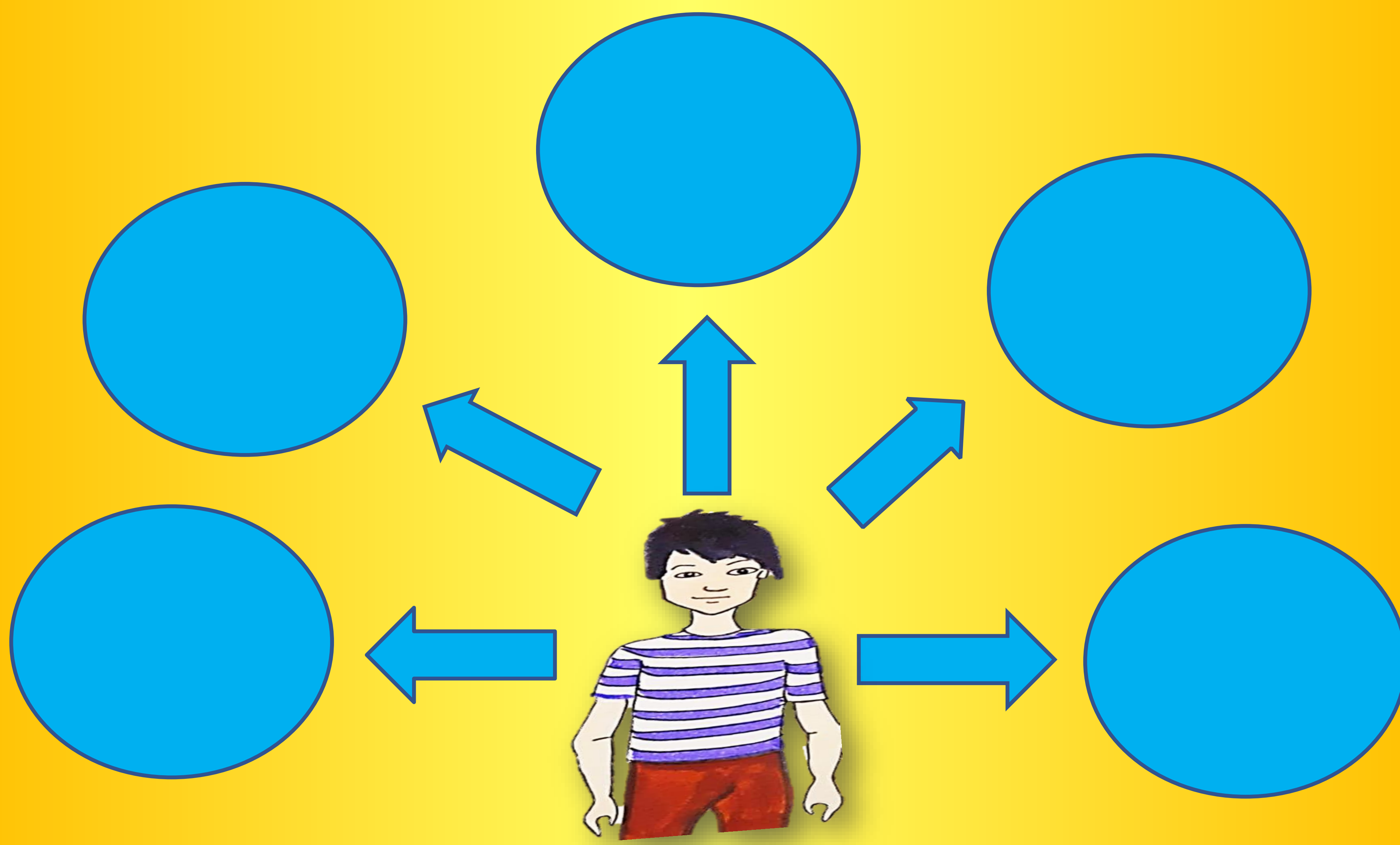

प्रश्न-13 पाठ में प्रयुक्त मुहावरों को दिए गए शब्द–जाल में से छाँटिए ।

ल	स	ह	व	म	न	भ	स
छ	चे	क	ब	ल	क	ख	म
च	ह	वा	इ	याँ	उ	ड़	ना
आ	रा	आ	ऐ	ए	ग	प	त
ओ	स	ई	पे	अ	धे	त	र
ए	फ़े	उ	ट	इ	के	ल	ब
अ	द	त	में	उ	सि	म	ह
ह	प	द	दा	फ	र	व	द
क्ष	ड़	झ	ढ़ी	र	से	ब	ज
त्र	ना	फ	हो	श	सीं	अ	झ
श्र	श	ट	ना	स	ग	ठ	ढ

व्याकरण संबंधी कार्य/प्रश्नोत्तर

मंजूषा

मोहन, डॉक्टर, हर्ष, वैद्यजी, दीनानाथ, रामू की काकी , मास्टरजी , घबराहट, कराहता

प्रश्न-1 मञ्जूषा में दिए गए शब्दों को व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा तथा भाववाचक संज्ञा के आधार पर अलग-अलग करके लिखिए ।

प्रश्न-2 निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए ।

(क) माँ
(ख) बालक
(ग) मास्टरजी
(घ) यकायक
(ङ) चेहरा

प्रश्न-3 निम्नलिखित शब्दों का मिलान उनके उचित विलोम शब्दों से कीजिए।

शब्द	विलोम
(क) जवाब	बुरा
(ख) प्रवेश	विषाद
(ग) भला	सवाल
(घ) हर्ष	निकास

प्रधानाचार्या की कलम से

परिवर्तन अनिवार्य है I यह वर्ष अध्यापन के क्षेत्र में चुनौतीपूर्ण रहा है। संपूर्ण शिक्षा समुदाय – शिक्षक, छात्र, और अभिभावक ने नई शिक्षण पद्धति के लिए खुद को फिर से तैयार किया है।

प्रौद्योगिकी की शक्ति परिवारों, स्कूलों और पूरी दुनिया के देशों में प्रतिध्वनित हुई है। क्लाउड कंप्यूटिंग, ब्रेकआउट रूम, एप्स बनाना, मशीन लर्निंग और इंटरनेट इन सभी ने शैक्षिक प्रक्रियाओं को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया है।

सी.बी.एस.ई. स्कूलों के शिक्षकों के लिए ग्राफिक **नॉवल** एक ऐसा मंच बन कर सामने आया है जिसके ज़रिए शिक्षक वर्ग अध्यनुभूति और मेटा लर्निंग के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए जुड़ गया।

मैं, श्री संदीप सेठी (शिक्षा निदेशक) की प्रशंसा करना चाहती हूँ जिन्होंने इसे अस्तित्व में लाने के लिए अथक प्रयास किया।

सुश्री अनिता कारवाल (आई. ए. एस.) शिक्षा सचिव, भारत सरकार, देशभर में शिक्षा के क्षेत्र में चमकती रोशनी के समान हैं। उनकी रचनात्मकता, नवाचार के लिए उत्साह और प्यार अद्वितीय है।

श्री मनोज आहूजा (आई.ए.एस)सी.बी.एस.ई.अध्यक्ष ने इस समृद्ध अनुभव पर विचार कर , हम सभी को प्रेरित किया।

स्प्रिंगडेल्स स्कूल पूसा रोड के मेरे शिक्षक गण बहुत सृजनशील है। जिन्होंने इस नई पहल को अपनाया तथा उसे एक रचनात्मक उपकरण के रूप में ढाला।

डॉ. अमीता मुल्ला वॉतल

(प्रधानाचार्या, स्प्रिंगडेल्स स्कूल, पूसा रोड)

सारांश

प्रस्तुत एकांकी में एक नौ साल का बालक है मोहन, जो तीसरी कक्षा में पढ़ता है। एक दिन उसके पेट में अचानक दर्द हो जाता है और माता- पिता के पूछने पर वह बस यही कहता है कि पेट में ऐसे-ऐसे हो रहा है। उसके पेट में ऐसे-ऐसे क्यों हो रहा है, यह किसी की समझ में नहीं आता। उसकी माँ पेट दर्द के लिए सभी घरेलू उपाय करती है। पिताजी डॉक्टर और वैद्य को बुलाते हैं।

पड़ोसी दीनानाथ जी मोहन को देखने आते हैं और उसके नटखट होने की बात कहकर उसके बीमार होने पर दुख जताते हैं।कुछ देर में वैद्य जी आते हैं और वायु का प्रकोप होने की बात करते हैं । उनके बाद डॉक्टर साहब आते हैं मोहन की जाँच करते हैं और पहले फोड़ा होने की शंका जताते हैं परंतु बाद में पेट साफ ना होने के कारण तकलीफ़ होने की बात कहते हैं।

मोहन की पड़ोसिन भी मोहन की माँ से उसका हालचाल पूछती है।अंत में मोहन के मास्टर जी उसकी बीमारी का उचित कारण बताते हैं कि छुट्टियाँ समाप्त होने वाली हैं और मोहन ने विद्यालय से मिला गृह कार्य पूरा नहीं किया था। इस भय से वह विद्यालय ना जाने का एक बहाना करता है कि उसके पेट में ऐसे -ऐसे हो रहा है। जिसका उपाय मास्टरजी, उसे विद्यालय से दो दिन की छुट्टी देकर करते हैं ताकि वह अपना काम पूरा कर सके।

Springdales School
Pusa Road UPPER RIDGE ROAD
JUNCTION, New Delhi, 110005
Website: www.springdalespusa.com
(Affiliated to C.B.S.E)